बी.ए. द्वितीय वर्ष (राजनीति विज्ञान)
प्रथम प्रश्न-पत्र

—डॉ. कृपा शंकर पालन

⇒ एक्वीनास के कानून सम्बंधी विचार (Thoughts of Aquinas on Law)

→ एक्वीनास का कानून एवं न्याय सिद्धान्त वह धागा है जिसके माध्यम से उसने अरस्तू, स्टोइज्म, आगस्टाइन, सिसरो, रोम के साम्राज्यवादी विधिवेत्ताओं आदि के सिद्धान्तों में समन्वय स्थापित करके आधुनिक युग को सम्प्रेषित किया है।

→ कानून की परिभाषा:— कानून विवेक से प्रेरित और लोक-कल्याण हेतु अधिकारी द्वारा जारी किया गया आदेश है जिस पर समुदाय की व्यवस्था का भार होता है।

→ कानून का वर्गीकरण:—

① शाश्वत कानून (Eternal Law):— ईश्वरीय ज्ञान, जिसके द्वारा प्रकृति की सृष्टि एवं प्रकृति तथा ब्रह्मांड पर नियंत्रण रखा जाता है। सर्वोच्च विवेक का प्रतीक
- सम्पूर्ण सृष्टि के अंतर्गत मानव समाज, पशु, वनस्पति, आदि इसके अधीन हैं।
- मनुष्य बुद्धि सीमित होने के कारण शाश्वत कानून को पूर्णरूप से समझ पाने में असमर्थ रहती है।

② प्राकृतिक कानून (Natural Law):— इस कानून की उत्पत्ति शाश्वत कानून से होती है। यह मनुष्य में निहित दैवी प्रेरणा है।
- मनुष्य भले-बुरे, सत-असत के मध्य भेद करता है। विवेक की सभी वस्तुओं में समानरूप से व्याप्त रहता है। पशुओं एवं वनस्पतियों में भी व्याप्त।
- समाज में रहना, आत्मरक्षा करना, सन्तान उत्पन्न करना, विवेक का विकास करना आदि प्राकृतिक कानून के माध्यम से ही सम्भव है।

③ दैवीय कानून (Divine Law):— इस कानून का निर्माण इल्हाम (रहस्यवाणी) (Revelation) के द्वारा होता है जिसे बाद में धर्मग्रंथों में लिपिबद्ध कर दिया जाता है।
- दैवीय कानून मानव जीवन के आध्यात्मिक पक्ष को नियमित और नियंत्रित करता है।
- इसका पालन करके मनुष्य अपूर्णता से पूर्णता की ओर अग्रसर होता है और परम आनन्द की अनुभूति प्राप्त करता है।